ऋग्वेद

यजुर्वेद

ओ३म्

वर्ष-१२ अंक-६
२७ फरवरी २०१६

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17
एक प्रति- 20-०० रू.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद

अथर्ववेद

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्

वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१२ **अंक-६**

२७ फरवरी २०१६
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११३
विक्रम संवत् २०७०
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	04
गाय सर्वोत्तम क्यों !	06
जरा सोचें, संभले और करें।	07
संस्कार	08
स्वर्ग–नरक	09
ये राजनीति	10
पशु पक्षियों से सीखें	12
जिव्हा को वश में रखिए	15
अनुभ्रमोच्छेदन	16
षट्क सम्पत्ति	18
महर्षि दयानन्द का गुरूवर विरजानन्द जी के आश्रम में प्रवेश एवं वेद वेदांगो का गहिन अध्ययन	19
आचार्य बलदेव जी को दी गई श्रद्धांजलि	21
श्री सुरेशचन्द्र आर्य सर्वसम्मति से प्रधान मनोनीत	22
भिण्ड संभाग में प्रचार कार्य	23
आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल तथा आर्य समाज असलसोल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न	24
वेद प्रचार कार्यक्रम	25
वैदिक धर्मप्रचार का महत्वपूर्ण अवसर उज्जैन सिंहस्थ	26

मार्च माह के पर्व, त्यौहार एवं जयन्ती

4	स्वामी दयानन्द जयन्ती
7	महाधिवरात्रि स्वामी दयानन्द बोध दिवस
10	रामकृष्ण परमहंस जयन्ती
11	पं. लेखराम जयन्ती
21	विश्व वानिकी दिवस
23	होली उत्सव, नवशस्येष्ठी पर्व
20	रानी अवंतीबाई लोधी बलिदान दिवस
22	विश्व जल दिवस
23	भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु शहीद दिवस
25	गणेश शंकर विद्यार्थी बलिदान दिवस
28	रंगपंचमी
8	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

सम्पादकीय :

हम सन्मार्ग व परोपकार के मार्ग से परे न हों

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः।
मान्तः स्थुनो अरातयः।। अथर्व. 13। 1। 59

हे इन्द्र सब शत्रुओं का विद्रावण करने वाले प्रभो हम मार्ग से कभी विचलित न हों। मार्ग भ्रष्ट होकर आपसे दूर न हो जावें, अपने सौम्य का रक्षण करने वाले यज्ञ से देवपूजा, संगतिकरण, दान सौम्य कर्म से दूर न हों। बड़ों का आदर परस्पर प्रेम व दान की वृत्ती वाले बनकर हम सौम का रक्षण कर पावें। काम, क्रोध, लोभ, मोह शत्रु हमारे अन्दर स्थित न हों। हृदय में कामादि का अधिष्ठान न हो। शत्रुओं से हृदय शून्य कर आपके दर्शन योग्य बनावें।

वेद मन्त्र में यह प्रार्थना की गई है कि हम शुभ मार्ग से परे न हों। वह शुभ मार्ग क्या है ? यज्ञ अर्थात् परोपकार का मार्ग ही शुभ मार्ग है। यज्ञ से अभिप्राय द्रव्य यज्ञ, श्रेष्ठतम कर्म और परोपकार से है। वेद मन्त्र में दूसरी बातें यह **कही गई हैं कि अद्रानशील हममे न ठहरे।** इसका अभिप्राय यह भी **है कि हममे अदानशीलता न हो।**

परोपकार का अर्थ है दूसरों की भलाई। मनुष्य का धर्म है कि वह दूसरों की भलाई करे। मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों के काम आये। मनुष्य यदि शक्ति रखते हुए भी दूसरों के काम नहीं आता तो वह मनुष्य जीवन के लिए दूषण रूप है। मनुष्य अपने लिये तो जीता ही है, परन्तु उसके जीवन की सार्थकता इसमें है कि वह दूसरों के लिए कितना जीता है ? दूसरों के लिए व्यक्ति कितना जिया, इसी से इसके जीवन की उत्कृष्टता का पता चलता है। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए मनुष्य को अपेक्षित कर्म करने ही पड़ते हैं। अपने लिए तो मनुष्य उद्योग करता ही है, परन्तु दूसरों के लिए कितना प्रयत्न करता है यह विवेचनीय विषय है। दूसरों का उपकार करने वाले मनुष्य धन्य होते है। महर्षि दयानन्द ने क्या खूब कहा है –

संसार दुःख दलनेन सुभूषिता ये धन्या नरा बिहितकर्मपरोपकाराः।

संसारी जनों के दुःखों के दूर करने से सुभूषित, वेदविहित कर्मों से जो उपकार करने में लगें रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं।

जब हम मनुष्य को देखते हैं तो इस तथ्य पर पहुंचते हैं कि एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के सहयोग की आवश्यकता होती है। संसार में कोई

ऐसा व्यक्ति नहीं जिसको दूसरे के सहयोग की आवश्यकता न पड़ी हो अथवा न पड़ती हो। बड़े–से–बड़े समर्थ व्यक्ति को भी दूसरे का सहयोग अपेक्षित होता है।

परोपकार से मनुष्य जीवन की शोभा और महिमा बढ़ती है। सच्चा परोपकारी सदा प्रसन्नचित्त रहता है। वह दूसरे का कार्य करके हर्ष की अनुभूति करता है। वह अपने अन्दर दिव्य प्रकाश अनुभव करता है सच्चा परोपकारी दूसरे का काम संवारकर सच्चा सुख प्राप्त करता है।

सच्चा परोपकारी जीवन में यश और सम्मान प्राप्त करता है। महान पुरूष संसार में सम्मान ही चाहते हैं। उपकृत उनका सदा सम्मान करते हैं।

अधमा धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः।
उत्तमा मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम्।।

निकृष्ट व्यक्ति धन की इच्छा करते हैं, मध्यम श्रेणी के व्यक्ति धन और मान दोनों चाहते हैं और उत्तम व्यक्ति केवल मान ही चाहते हैं। वास्तव में मान ही महापुरूषों का धन होता है।

परोपकारी मनुष्य जब दूसरे का उपकार करता है तो वह समाज में एक स्वस्थ प्रथा को स्थापित करता है। यह स्वस्थ प्रथा देखने और सुनने वाले को भी परोपकार की प्रेरणा देती है। इसी स्वस्थ प्रथा के सहारे मनुष्य समाज स्थिर है। मनुष्य तो मनुष्य है वह तो उपकार को समझता ही है, परन्तु पशु भी उपकार को समझते हैं। भास ने लिखा है –

तिर्यक्ग्योनयोऽपि उपकृतमवगच्छति। प्रतिमा 64 । 5

पशु पक्षी भी उपकार को समझते हैं वे भी जानते है कि उन पर अमुक उपकार किया गया है।

परोपकार की बहुत महिमा गायी गई है। किसी ने क्या सुन्दर कहा है –

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कक्डणेन।
विभाति कायः करूणाकुलानां परोकारेण न चन्दनेन।।

कानों की शोभा वेदादि शास्त्रों के सुनने से होती है, कुण्डल धारण करने से नहीं। हाथ की शोभा कक्डण से नहीं, दान से बढ़ती है। करूणा से व्याकुल पुरूषों का शरीर चन्दन लेपन से नहीं, परोपकार से ही शोभा पाता है।

जल ही जीवन है – इसका सदुपयोग करें।
– जनहित में प्रकाशित

गाय सर्वोत्तम क्यों !

गौ और कृषि अन्योन्याश्रित हैं। इसीलिए महर्षि ने गोकृष्यादिरक्षिणी सभा नाम रखा था। गाय का दूध सर्वोत्तम क्यों हैं ? इसमें निम्नलिखित मुख्य विशेषताएं हैं –

1. गाय का दूध पीला और भैंस का दूध सफेद होता है। इसीलिए इसके दूध के विशेषज्ञ कहते हैं कि गाय के दूध में सोने का अंश होता है जो कि स्वास्थ्य के लिए उत्तम है और रोगनाशक है।

2. गाय का दूध बुद्धिवर्धक और आरोग्यप्रद है।

3. गाय का अपने बच्चे के साथ स्नेह होता है जबकि भैंस का बच्चे के साथ ऐसा नहीं होता है।

4. गाय के दूध में स्फूर्ति होती है। इसीलिए गाय के बछड़े व बछियॉ खूब उछलते कूदते फिरते हैं। भैंस का दूध पीने से आलस्य व प्रमाद होता है।

5. गाय के बछड़े को 50 गायों या अधिक में छोड़ दिया जाय तो वह अपनी माता को जल्दी ही ढूँढ़ लेता है। जबकि भैंस के बच्चों में यह उत्कृष्टता नहीं होती।

6. गाय का दूध तो सर्वोत्तम होता ही है, साथ ही गाय का गोबर व मूत्र भी तुलना में श्रेष्ठ है। गाय का गोबर स्वच्छ व कीटनाशक होता है। गाय की खाद तीन वर्ष तक उपजाऊ शक्ति बढ़ाती है किन्तु भैंस की खाद तो एक दो वर्ष बाद ही बेकार हो जाती है और गौमूत्र का स्प्रे करके कीड़ों के नाश में भी उपयोग लिया जाता है।

7. गौमूत्र उत्तम औषधि है। आयुर्वेद के ग्रंथों में पचास से भी अधिक रोगों में इसका उपयोग किया जाता है।

8. कृषि के कार्यों के लिए गाय के बछड़े सर्वोत्तम हैं। भारतवर्ष में आज के मशीनीयुग में भी 96 प्रतिशत खेती बैलों से होती है।

9. गाय एक सहनशील पशु है। वह कड़ी धूप व सर्दी को भी सहन कर लेती है। इसीलिए गाय जंगल में घूमकर प्रसन्न होती है।

10. गाय के दूध में सूरज की किरणों से भी निरोगता बढ़ती है। इसीलिए वह अधिक स्वास्थ्यप्रद है।

11. गाय की अपेक्षा भैंस के बच्चे/भैंसा धूप में कार्य करने में सक्षम नहीं होते।

12. गाय की अपेक्षा भैंस के घी में कण अधिक होते हैं। जो कि सुपाच्य नहीं होते।

जरा सोचें, संभले और करें।

इतने नरम मत बनो कि लोग तुम्हें खा जायें।
इतने गरम मत बनो कि लोग तुम्हें छू भी न सकें।

इतने सरल मत बनो कि लोग तुम्हें मूर्ख बना दें।
इतने जटिल मत बनो कि लोग तुम्हें मिल न सकें।।

इतने गम्भीर मत बनो कि लोग तुमसे ऊब जायें।
इतने छिछले मत बनो कि लोग तुम्हें माने ही नहीं।।

इतने महंगे मत बनो कि लोग तुम्हें बुला न सके।
इतने सस्ते भी मत बनो कि लोग तुम्हें नचाते रहें।।

आपके एक पल का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़ सकता है।
आपके एक पल का सत्संग भविष्य बना सकता है।।

सत्य

सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा है, उसे याद नहीं रखना पड़ता।

संकलन – स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती

अशफाकुल्ला खान

"जाऊँगा खाली हाथ मगर ये दर्द साथ ही जायेगा, जाने किस दिन हिन्दोस्तान आजाद वतन कहलायेगा ? बिस्मिल हिन्दू है कहते हैं "फिर आऊँगा, फिर आऊँगा, फिर आकर के ऐ भारत माँ तुझको आजाद कराऊँगा, जी करता है मैं भी कह दूं पर मजहब से बंध जाता हूं, मैं मुसलमान हूं, पुर्नजन्म की बात नहीं कर पाता हूं, हाँ खुदा अगर मिल गया कहीं अपनी झोली फैला दूंगा और जन्नत के बदले उससे एक पुर्नजन्म ही मागूंगा।"

संस्कार

– **आचार्य ज्ञानेश्वरार्य,** रोजड़

प्रश्न 330 : संस्कार किसे कहते हैं ? व कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर : जिनसे शरीर, मन और आत्मा उत्तम बनते हैं उसको संस्कार कहते हैं। संस्कार 16 प्रकार के होते हैं – 1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. अन्नप्राशन 7. निष्क्रमणम् 8. चूड़ाकर्म, 9. कर्णवेध, 10. उपनयन, 11. वेदारम्भ, 12. समावर्तन, 13. विवाह, 14. वानप्रस्थ, 15. सन्यास, 16. अन्त्येष्टि।

प्रश्न 331 : समाज में सन्यासियों की क्या आवश्यकता है ? क्या वे समाज पर भार रूप नहीं हैं ?

उत्तर : जैसे शरीर में शिर की आवश्यकता होती है वैसे ही समाज के सुसंचालन हेतु, धार्मिक, विद्वान, तपस्वी, धन, मन और पुत्र शिष्य की इच्छा का त्याग करने वाले सन्यासियों की आवश्यकता है।

प्रश्न 332 : गर्भस्थ शिशु के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु कौन से संस्कार किये जाते हैं ?

उत्तर : गर्भस्थ शिशु के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु पुंसवन और सीमन्तोनयन संस्कार किये जाते हैं।

प्रश्न 333 : विभिन्न संस्कारों में किये जाने वाले विविध कर्मकाण्डों से क्या तात्पर्य – अर्थ होता है ?

उत्तर : विभिन्न संस्कारों में किये जाने वाले विविध कर्मकाण्डों में संकेत अथवा प्रतीक छिपे होते हैं। आगे जीवन में कैसे चलना होता है उसका बोध मिलता है। कुछ व्रत, प्रतिज्ञाओं का भी धारण होता है। इन कर्मकाण्डों से सदाचार, शिष्टाचार सिखाया जाता है।

प्रश्न 334 : संसार में मृतक देह की अंतिम विधि के लिए कौन कौन सी पद्धतियॉ प्रचलित हैं ?

उत्तर : संसार में मृतक देह की अन्तिम विधि के लिए मुर्दे को गाड़ना, नदी में बहाना, जंगल, पर्वत आदि स्थानों में खुला छोड़ देना तथा जलाना आदि पद्धतियॉ प्रचलित हैं।

प्रश्न 335 : इनमें से सर्वश्रेष्ठ विधि कौन सी है और क्यों ?

उत्तर : इनमें सर्वश्रेष्ठ मुर्दे को जलाना है। क्योंकि इससे जमीन, पानी, हवा आदि, पर्यावरण की बहुत ही कम हानि होती है थोड़ी सी भूमि में लाखों, करोड़ों मृतदेहों के अन्तिम संस्कार किये जा सकते हैं।

स्वर्ग–नरक

प्रश्न 336 : क्या स्वर्ग–नरक किसी स्थान विशेष का नाम है ?
उत्तर : नहीं, स्वर्ग–नरक कोई स्थान विशेष का नाम नहीं है।
प्रश्न 337 : स्वर्ग का वास्तविक अर्थ क्या है ?
उत्तर : सुख विशेष की प्राप्ति को स्वर्ग कहते हैं।
प्रश्न 338 : स्वर्ग लोक में इन्द्र, रूद्र, वरूण आदि देवता रहते हैं, क्या यह मान्यता सही है ?
उत्तर : नहीं, यह मान्यता सही नहीं है।
प्रश्न 339 : वास्तव में देवता किसे कहते हैं ?
उत्तर : माता, पिता, गुरू, विद्वान, अतिथि आदि तथा दानी, परोपकारी, धर्मात्माओं को देवता कहते हैं।
प्रश्न 340 : नरक किसे कहते हैं ?
उत्तर : दुःख विशेष की प्राप्ति को नरक कहते हैं।
प्रश्न 341 : नरक प्राप्ति का अर्थ क्या है ?
उत्तर : जीवन में अभाव, कष्ट, दुःख, पीड़ा और मरणोपरान्त कीट, पतंग, सूअर, कुत्ता, बिल्ली आदि दुःखमय योनि में जन्म लेना तथा घोर दुःख कष्ट पाना नर्क प्राप्ति कहलाता है।
प्रश्न 342 : क्या कुत्ते, बिल्ली, सूअर और मनुष्य को समान सुख दुःख है, वह अपने शरीर में सुखी, हम अपने शरीर में क्या यह मान्यता ठीक है ?
उत्तर : कुत्ते, बिल्ली, सूअर और मनुष्य को समान सुख–दुःख नहीं है अपितु पशुओं को दुःख अधिक होता है। वह अपने शरीर में सुखी, हम अपने शरीर में, यह मान्यता ठीक नहीं है। मनुष्यों को उत्कृष्ट बुद्धि, हाथ, वाणी ये विशेष उपलब्ध हैं जिससे वे अधिकाधिक सुख प्राप्त कर सकते हैं। जबकि पशु आदि को विशेष साधन न होने से व इनकी स्वतन्त्रता की सीमा होने से इन्हें दुःख अधिक होता है।
प्रश्न 343 : स्वर्ग प्राप्ति किसे कहते हैं ?
उत्तर : धन, ऐश्वर्य से सम्मान विद्वान माता–पिता के यहां जन्म लेना तथा विशेष सुख, शान्ति, आनन्द, उत्साह, निर्भयता आदि को प्राप्त करना स्वर्गप प्राप्ति कहलाता है।
प्रश्न 344 : स्वर्ग प्राप्ति के साधन कौन कौन से हैं ?
उत्तर : पंचमहायज्ञ का अनुष्ठान करना, विद्या अध्ययन करना, दान करना, पुण्य करना आदि स्वर्ग प्राप्ति के साधन हैं।
प्रश्न 345 : नरक प्राप्ति के कारण क्या हैं ?
उत्तर भ्रष्टाचार, व्यभिचार, मांसाहार, चोरी, झूठ कपट आदि अशुभ कर्म नरक प्राप्ति के कारण हैं।
प्रश्न 346 : स्वर्ग और नरक की प्राप्ति क्या इसी जन्म में भी हो सकती है ?
उत्तर : हॉ, स्वर्ग और नरक की प्राप्ति इसी जन्म में भी हो सकती है। जीते जी दुःख, अभाव, बन्धन, भय, पीड़ा, रोग, वियोग आदि की प्राप्ति नरक और उत्तम स्वास्थ्य, धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य, सुख शान्ति की प्राप्ति स्वर्ग कहलाती है।

ये राजनीति

ये राजनीति भी बड़ी अजीब है, जाने क्या–क्या करवाती है।
छोटे से पौधे को झाड़ और राई को पहाड़ बनाती है।।
गम हो या खुशी हर हाल में स्वार्थ देखती है।
जब जहां मौका मिले, अपनी रोटी सेकती है।।
अंग्रेजों की नीति अपना कर, फूट सब में डालती है।
अपनों को डसवाने हेतु, विषधर घर में पालती है।।
भाषा, सीमा, जाति, सम्प्रदाय, इसके खास मोहरे है।
मंहगाई घटे या बढ़े, माप दण्ड सदा दोहरे है।।
पल में दूरी, पल में दोस्ती चाहे जब जताती है।
घूड़े के दिन बदलते कैसे, ये राजनीति सिखाती है।।
इस युग में सबसे पावरफुल, और असरदार है।
साधु सन्त नेता अभिनेता सभी आते द्वार है।।
हर काम में इसका महत्व बढ़ा है।
जिधर देखों उद्घाटन में नेता ही खड़ा है।।
नैतिकता को कुचल कर स्वार्थ मन्त्र देती है।
मौका मिल जाए तो, सारा देश ही खेती है।।
इसलिए स्वच्छन्द सांड बन, खेतों को उजाड़ रहे।
सारा तन्त्र इनका ही है, जाकर दुखड़ा किससे कहे।।
करोड़ों परेशान जिन्दगी, कहर से इनके कराह रही।
ये बदनाम, डायिन फिर भी खुद को सराह रही।
दिशा विहिन बेकाबू वाहन सी, बढ़ रही इसकी रफ्तार,
मजबूरी है होना पड़ रहा, इस वाहन में ही सबको सवांर।
अनगिने छिपे हैं राज, तभी यह राजनीति कहलाती।
बकरी के सिर पर चाहे तो, भैंस के सींग ये लगाती।।

गर प्रवाह इसका और बढ़ता गया।
जन मानस का हौंसला ढलता गया।
तो सुनामी सी कहर ढायेगी।
अपने ही घर में सबको, बन्धक बनायेगी।
चन्द हाथों में गिरफ्त होगी आजादी,
बनकर रह गया गर, समाज भाग्यवादी।
तो फिर इसके बदचलन चरित्र को नकार दो,
बिगड़े हुए स्वरूप को फिर से सुधार दो।
कुर्सी के, पार्टी के इर्द गिर्द घुमना छोड़कर,
राजनीति के नाम पर चादर मतलब की ओढ़कर।
जो राजनीति में आते हैं,
भेड़िए बन कर भी पुजाते हैं।
उनको समझों और समझा दो।
राजनीति राष्ट्रनीति है ये बता दो।
तब ही राजनीति स्वच्छ व पवित्र बन पायेगी।
फिर यह अभिशाप नहीं, कल्याणी कहलाएगी।

— प्रकाश आर्य, महू

ओउम् तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि, ज्योति मतः पथोरक्ष धिया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनयादैव्यं जनम्।।

ऋ, 10,53,6

अर्थ – हे मनुष्य ज्ञान के तन्तु को तनते हुए तू लोक के प्रकाशक सूर्य का नियम पालन कर उसका अनुकरण कर। बुद्धि और कर्म से किए गए प्रकाशक युक्त मार्गो की रक्षा कर। उपासकों के कर्म को निरन्तर कर, मनुष्य बन, और लोगों को दिव्य भगवान का उपासक बना।

गतांक से आगे........

पशु पक्षियों से सीखें

– दिवंगत मनुदेव अभय

मुर्गों की लड़ाईयां जग प्रसिद्ध हैं। मुगल काल में मुर्गे, बटेर, तीतर की लड़ाइयों के खूब आयोजन होते थे। तीतर के बारे में कहा गया है–

असली तीतर कभी न आवे भीतर।
जो अन्दर आवे समझो वह नकली तीतर।।

मुर्गे में तीसरा समाजवादी गुण यह है कि वह कभी भी अकेला नहीं खाता। खाने के पहिले अपने अन्य सहयोगियों को कुछ बांट देता हैं, और फिर शेष वस्तु खाकर सन्तोष करता है। अन्त में चौथा विशेष गुण है कि उसमें सवावलम्बन, स्वतन्त्रता तथा स्वाभिमान के गुण कूट–कूट क भरे हैं, अर्थात् अपने स्वाभिमानी स्वभाव के अनुसार वह स्वयं आक्रमण कर अपना शिकार मारता है। उसे ही खाता है। मुर्गा कभी भी दूसरे के द्वारा मारे गये शिकार को कभी नहीं खाता। बेचारी मुर्गी की गणना तो दाल–बराबर ही मानी गई है।

अतएव मुर्गे के पूर्वकथित गुणों की तरह प्रत्येक में स्वावलम्बन, स्वातिथ्य और स्वाभिमान के गुण होने चाहिए। संसार के सभी महान वीरों में उपर्युक्त तीनों गुण सर्वत्र पाये जाते हैं।

(घ) वायस (काग, कौआ) :–

गूढ़मैथुनं वरित्वं व काले–काले च संग्रहम्।
अप्रमत्तं विश्वासं च पंच शिक्षेच्च वायसात्।।

कौआ अपने आप में बड़ा चतुर और चालाक पक्षी माना जाता है। इसमें सबसे बड़ा गुण यह है कि यह सार्वजनिक स्थल पर कभी भी मैथुन किया नहीं करता। कहा भी गया है–भजन, भोजन तथा शयन (मैथुन) एकांत और शांत स्थान में ही करना चाहिए। इससे दोनों की लोक–लज्जा बनी रहती है। काग में दूसरा गुण यह है कि वह अन्य पक्षियों के समान थोड़ा सा भय खाकर उड़ता नहीं है, इसलिए इसे ढीठ पक्षी कहा जाता है। कहा जाता है कि अपनी कौआ मादा के अण्डे देने के पूर्व ही यह सींके बीन बीन कर घौंसला तो बनाता है परन्तु अण्डों को उस घौंसले में न रखकर कोयल के घोसले में रख देता है। समान रंग और समान अण्डों की आकृति के कारण बेचारी कोयल ही उन्हें सेती है। यह लोक–श्रुति है कि कौआ

बहुत सतर्क तथा सावधान रहने वाला पक्षी माना गया है। यह अपने शत्रु की पकड़ में कठिनाई से आता है। अन्त में इसकी एक विशेषता के संबंध में जग प्रसिद्धि है कि यह पक्षी अपने अन्य मित्र पक्षियों पर ऑख बन्द कर कभी भी विश्वास नहीं करता। यह मित्र और शत्रु से अपनी दूरी सदैव बनाये रखता है।

कागराज के इन पांचों गणों में से कौन से गुण की उपेक्षा की जा सकती है। इसीलिए कहा गया –

उत्तम विद्या लीजिए, चाहे नीच पै होय।
परो अपावन कीच में, कंचन तजै न कोय।।

(ङ) श्वान (कुत्ता) :–

बह्वाशी स्वल्पसन्तुष्टः सुनिद्रो लघुचेतनः।
स्वामिभक्तश्च शूरश्च षडेते श्वानतो गुणाः।।

अर्थ – कुत्ते या श्वान का यह गुण है कि जब उसे खाने का अवसर मिल जाता है तब वह बहुत खा जाता है। और उसे कुछ खाने को नहीं मिल पाता, तो वह उस अभाव की स्थिति में भी संतुष्ट रहता है। कभी–कभी कहीं सूंघकर ही सन्तोष कर लेता है। श्वान–निद्रा जगप्रसिद्ध है, पत्ता खड़गा, बन्दा भड़का, अर्थात कुत्ता गहरी नींद लेता है, परन्तु थोड़ी–सी भी आहट पाकर वह कान फड़फडाता हुआ तुरन्त जाग जाता है। इसकी स्वाभिशक्ति जग–प्रसिद्ध है। अंग्रेजी में कहावत है – ऐज फेथफुल ऐज डॉग। अपने स्वामी की रक्षा के लिए अपने प्राणों को भी खतरे में डाल देता है। दूसरों से झगड़ा हो जाने पर यह किसी बड़े शत्रु से भी कभी नहीं घबराता है। कहते हैं कि सोन–कुत्तों (जंगली) के समूह को देखकर खूंखार शेर भी दुम दबाकर भाग लेता है। ये गुण कुत्ते में पाये जाते हैं। व्यवहारिक रूप से इन गुणों को ग्रहण करने में तनिक भी संकोच नहीं होना चाहिए। आलोचना की दृष्टि से कुत्ते में अनेक दुर्गुण हैं, किन्तु स्थानाभाव से यहां चर्चा कर स्थल को घेरने में कोई सार्थक्य नहीं है।

(च) गर्दभराज (गधा) – इसे खर भी कहा जाता है। किसी के प्रति घृणा या हिकारत से देखकर उसे गधा कहकर अपने मन की भड़ास निकाली जाती है। वस्तुतः गधे नामक प्राणी में कुछ गुण भी विद्यमान हैं। आचार्य चाणक्य कहते हैं –

सुश्रान्तोऽपि वहेद् भारं शीतोष्णं न च पश्यति।
सन्तुष्टश्चरते नित्यं त्रीणि शिक्षेच्च गर्दभात्।।

अर्थात् गधे में यह विशेषता है कि वह अत्यन्त थके होने पर भी मालिक द्वारा भार लाद देने पर वह बोझ ढ़ोने के लिए तैयार रहता है। उसके जीवन में विश्राम अवकाश (लैजर पीरियड) शायद ही होता है। वह गर्मी–सर्दी में सदैव एक–मना रहता है, उसे इस बात की कोई चिन्ता नहीं। वह सर्वदा अत्यन्त सन्तोष के साथ अपना जीवन व्यतीत करता है।

व्यवहारिक रूप में मनुष्य को गधे से उपरोक्त तीन गुण सिख लेने चाहिए। व्यक्ति को जो भी दायित्व (भार) सौंपा जाय, उसके अपने पूरे सामर्थ्य से सम्पन्न करने के लिए उद्यत रहना चाहिए। उसे ऋतु परिवर्तन के कारण पड़ने वाली गर्मी–शीत आदि की बिना चिन्ता के अपने कार्य में सन्नद्ध रहना चाहिए। गर्मी–शीत का बहाना बनाकर काम–चोर अपना पिण्ड छुड़ाने का प्रयत्न करते हैं, यह कायरता है। इसी प्रकार मनुष्य को अपने कार्य में क्षमता के अनुसार रूचि लेकर उसे सम्पन्न करते हुए प्रसन्नता और सन्तोष का अनुभव करना चाहिए।

इन 20 प्रकार के गुणों, जो कि विभिन्न पशु–पक्षियों में पाये जाते हैं, में से यदि कुछ भी अपना लिये जायं तो मनुष्य को जीवन में अनावश्यक संकटों का सामना न करना पड़े।

अतः इसी सन्दर्भ में आचार्य चाणक्य कहते हैं –

य एतान् विंशतिगुणानाचरिष्यति मानवः।
कार्यावस्थासु सर्वासु अजेयः स भविष्यति।।

अर्थात् – जो व्यक्ति इन 20 गुणों को सीख लेता है अर्थात इन्हें अपने आचरण में व्यवहारिक जीवन में ले आता है वह सब कार्यों तथा अवस्थाओं में सफलता प्राप्त कर लेता है। उसे कभी भी दूसरों के सम्मुख बहाने बनाकर मुंह नहीं छिपाना पड़ता है और अन्त में विजयश्री उस पुरूषार्थी के चरण चूमती है। ये सफलता के कुछ गुर हैं। इन पर गंभीरतापूर्वक विचार कर व्यवहार में लाना अधिक लाभप्रद होगा।

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरः चरितात्मनः।
किन्नु पशुभिस्तुल्यं किन्नु सत्पुरशैरीति।।

अर्थात् – हमें आत्म चिन्तन करना चाहिए कि कहीं मेरा जीवन पशु तुल्य तो नहीं है ? या फिर महापुरूषों के समान प्रगतिशील है।

बोधकथा –

जिव्हा को वश में रखिए

एक थे सेठजी। खांसी लग गई उन्हें, परन्तु उन्हें आदत थी खट्टा दही, खट्टी लस्सी, खट्टा आचार और इसी प्रकार की वस्तुएं खाने की। जिस वैद्यजी के पास जाते, वह कहता – ये वस्तुएं खाना छोड़ दो, उसके पश्चात चिकित्सा हो सकती है।

अन्त में एक वैद्यजी मिले। उन्होंने कहा – मैं चिकित्सा करता हूं। आप जो चाहे खाते रहिये।

वैद्य जी ने औषधि दी। ये सेठजी खट्टी वस्तुएं खाते रहे। कुछ दिन के पश्चात मिले तो सेठजी बोले – वैद्यजी। खांसी बढ़ी तो नहीं परन्तु कम भी नहीं हुई।

वैद्यजी ने कहा – आप मेरी दवाई खाते रहिये, खट्टी चीजें भी खाते रहिये, इससे तीन लाभ होगें।

सेठजी ने पूछा – कौन–कौन से ?

वैद्यजी बोले – पहला यह कि घर में चोरी कभी नहीं होगी, दूसरा यह कि कुत्ता कभी नहीं काटेगा और तीसरा यह कि बुढ़ापा नहीं आएगा।

सेठजी ने कहा – ये तो वस्तुतः लाभ की बातें हैं, परन्तु खांसी में खट्टी वस्तुएं खाने से यह सब कुछ होगा कैसे ?

वैद्यजी बोले – खांसी हो और खट्टी वस्तुएं खाते रहिए, तो खांसी कभी अच्छी होगी नहीं। दिन में खांसोगे, रात में भी, तब चोर कैसे आएगा? खांस–खांसकर हो जाओगे दुबले। लाठी के बिना उठा नहीं जायेगा, चला नहीं जाएगा। हर समय लाठी हाथ में रहेगी तो कुत्ता कैसे काटेगा ? और दुर्बलता के कारण मर जाओगे, यौवन में ही। तब बुड़ापा आएगा कैसे ?

सेठजी को समझ आ गई। परन्तु प्रायः हमें समझ नहीं आती। इस चटोरी जिव्हा के लिए पता नहीं, हम क्या–क्या करते हैं, किस–किस प्रकार अपना नाश करते हैं। सबसे बड़कर अपनी मानवता को खो बैठते हैं।

पुनन्तु मा देव जनाः पुनन्तु मनवो धिया।
पुनन्तु विश्वाभूतानि पवमानः पुनातु मा।।

अथर्व वेद 8/19/1

अर्थात् – हे देवताओं, मुझे बुद्धि और कर्म से शुद्ध करें, मननशील विद्वान लोग मुझे शुद्ध करें, पवित्र परमात्मा मुझे शुद्ध करे।

महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय :

अनुभ्रमोच्छेदन

प्रश्न 1 : भ्रमोच्छेदन के बाद अब यह अनुभ्रमोच्छेदन कौन से गंथ का नाम है ?

उत्तर : जैसा कि भ्रमोच्छेन ग्रंथ के परिचय में बताया गया है कि महर्षि ने राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द के निवेदन पत्र के उत्तर में भ्रमोच्छेदन ग्रंथ की रचना की थी। अब इसके उत्तर में राजा शिवप्रसाद जी ने पुनः द्वितीय निवेदन नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसके उत्तर में यह अनुभ्रमोच्छेदन नांमक ग्रंथ लिखा गया।

प्रश्न 2 : इस ग्रंथ की रचना कब हुई ?

उत्तर : इस ग्रंथ की रचना संवत् 1937, फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की तिथि 4, बृहस्पतिवार के दिन की गई।

प्रश्न 3 : कुछ लोगों का कहना है कि यह ग्रंथ महर्षि द्वारा नहीं लिखा गया, क्योंकि इस ग्रंथ के कुछ संस्करणों के मुख पृष्ठ तथा अन्त में पं. भीमसेन शर्मा का नाम छपा हुआ है।

उत्तर : ग्रंथ की रचना शैली एवं ऋषि दयानन्द के 21 अक्टूबर 1880 के पत्र से ज्ञात होता है कि यह ग्रंथ स्वयं महर्षि ने ही लिखवाया था। इसका हस्तलेख भी परोपकारिणी सभा, अजमेर में सुरक्षित है, जिस पर अनेक स्थानों पर ऋषि के हाथों से संशोधन किये गये हैं। कुछ अपरिहार्य कारणों से ऋषि के नाम का उल्लेख नहीं हो सका।

काशी–शास्त्रार्थ

प्रश्न 1 : यह शास्त्रार्थ कब और कहां हुआ था ?

उत्तर : जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है यह शास्त्रार्थ काशी, जो कि पौराणिकों का गढ़ था, में संवत् 1926 मि. कार्तिक सुदी 12, मंगलवार के दिन हुआ था।

प्रश्न 2 : शास्त्रार्थ किन–किनके बीच हुआ था अथवा शास्त्रार्थ के दोनों पक्ष कौन–कौन से थे ?

उत्तर : शास्त्रार्थ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी तथा काशी निवासी स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती तथा बालशास्त्री आदि पण्डित जी के बीच हुआ था।

प्रश्न 3 : शास्त्रार्थ का विषय क्या था ?

उत्तर : शास्त्रार्थ का विष मूर्तिपूजा था। इसमें स्वामी जी का पक्ष पाषाण मूर्तिपूजन आदि का खण्डन करना तथा काशी के पण्डितों द्वारा मूर्तिपूजा का मण्डन करना था। यह मण्डन वेद प्रमाण के आधार पर करना निश्चित हुआ था।

प्रश्न 4 : क्या काशी के पण्डित वेदों के आधार पर मूर्तिपूजा का मण्डन कर पाये थे ?

उत्तर : नहीं, वे कोई भी ऐसा वैदिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाये जिससे मूर्ति की पूजा करना सत्य सिद्ध हो सके। यहां तक कि वे प्रतिमा शब्द से अपने पक्ष को सिद्ध करना चाहते थे, वे भी नहीं कर पाये। अतः बाद में मूल विषय को छोड़कर वे विषयान्तर में आ गये और पुराण शब्द के विशेषण और विशेष्य विषय पर संवाद प्रारंभ हो गया।

प्रश्न 5 : इस विषय पर कौन सा पक्ष विजयी हुआ ?

उत्तर : इसमें भी काशीस्थ पण्डित पुराण शब्द को विशेष्यवाची (जो उनका पक्ष था) सिद्ध नहीं कर पाये, लेकिन स्वामी दयानन्द जी ने विशेषणवाची सिद्ध कर दिया। बाद में, अपनी पराजय होती देख काशीस्थ पण्डितों ने दो पेज स्वामी के समक्ष पटक कर, वहां लिखित पुराण शब्द को विशेषण सिद्ध करने के लिए कहा। स्वामीजी अभी उनको पढ़ ही रहे थे कि वे बीच में उठकर ही शेर शोर मचाने लगे और शास्त्रार्थ समाप्त हो गया।

प्रश्न 6 : पूरे शास्त्रार्थ में विजयी कौन घोषित किया गया ?

उत्तर : वास्तव में, काशी के लोग असभ्य व्यवहार करके, अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दयानन्द जी को पराजित घोषित करके तालियां आदि भी पीटने लगे। यह एकदम सभ्यता वरूिद्ध व्यवहार था। बाद में काशीराज के छापेखाने से छपकर भी उन्हें बदनाम करने की कोशिश की गई।

प्रश्न 7 : हो सकता है कि इस शास्त्रार्थ में स्वामी जी की ही पराजय हुई हो ?

उत्तर : इसी बात का निर्णय करने के लिए ही तो इस सम्पूर्ण शास्त्रार्थ को छापकर प्रकाशित किया गया, जिससे इसे पढ़कर सामान्य जनता भी निर्णय कर सके। इसके अतिरिक्त, इस शास्त्रार्थ के समय (संवत् 1926) से लेकर 1937 तक स्वामीजी, काशी में आकर बार–बार (छः बार) विज्ञापन लगाते रहे कि इतना होने पर भी कोई वैदिक प्रमाण एवं युक्ति के

आधार पर मूर्तिपूजा को सत्य सिद्ध करना चाहे तो सभ्यता पूर्वक विचार किया जा सकता है, परन्तु कोई भी सामने न आया। स्वामी जी उपर्युक्त घटना के बाद भी पहले की भांति ही वेदोक्त उपदेश करते रहे। यदि काशी के पण्डित विजयी हुए थे तो उन्हें शास्त्रार्थ अथवा विचार करने के लिए सामने आना चाहिए था, परन्तु कोई सामने नहीं आया। इससे सिद्ध होता है कि विजय स्वामी दयानन्द जी की हुई थी। वस्तुतः सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं।

प्रश्न 8 : यह शास्त्रार्थ कहां से और कब प्रकाशित किया गया ?

उत्तर : वैदिक यन्त्रालय से संवत् 1937 में यह शास्त्रार्थ प्रकाशित किया गया था।

प्रश्न 9 : यह पुस्तक किस भाषा में है ?

उत्तर : यह संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में लिखी गई है।

षट्क सम्पत्ति

(छः प्रकार के ऐश्वर्य का वर्णन)

शास्त्रों के अनुसार छः प्रकार के कर्म करने चाहिये। इन्हें षट्क सम्पत्ति कहते हैं।

1. **शम** – अपनी आत्मा और अन्तःकरण को अधर्म से हटाकर सदा धर्म में लगाये रखना।

2. **दम** – श्रोत्र आदि दन्द्रियों और शरीर को दुराचार आदि बुरे कामों से हटाकर शुभ कर्मों में लगाये रखना।

3. **उपरति** – बुरे काम करने वाले लोगों से सदा दूर रहना।

4. **तितिक्षा** – निन्दा, प्रशंसा, हानि, लाभ आदि में हर्ष, शोक को छोड़कर मोक्ष के साधनों में सदा लगे रहना।

5. **श्रद्धा** – वेद आदि सत्य शास्त्र और उनके ज्ञान से पूर्ण विद्वान सत्योपदेशक आप्त जनों पर विश्वास रखना।

6. **समाधान** – चित्त और एकाग्रता।

आजादी की बुनियाद –

महर्षि दयानन्द का गुरूवर विरजानन्द जी के आश्रम में प्रवेश एवं वेद वेदांगो का गहिन अध्ययन

– सीताराम आर्य, विदिशा

स्वामी दयानन्द जी महाराज अब पूर्ण युवा लगभग 30 वर्ष से उपर हो चुके थें और वेदों एवं शास्त्रों के विद्वान भी बन चुके थे, किन्तु वेदों के भाष्य (अर्थ) करने की चॉबी अभी आपके हाथ नहीं लगी थी। इस हेतु आप मथुरा प्रस्थान करते हैं। प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती उन दिनों वेदों के प्रकाण्ड विद्वान तथा संस्कृत व्याकरण के साक्षात सूर्य थे। उनकी विद्वता की ख्याती दूर दूर तक फैल रही थी। स्वामी दयानन्द भी अपनी जिज्ञासा लेकर उनके आश्रम में मथुरा पहुंच जाते हैं।

गुरूवर स्वामी विरजानन्द जी का जन्म ग्राम गंगापुर, जिला जालंधर पंजाब में हुआ। वहां पं. नारायण दत्त का परिवार रहता था। गुरूवर विरजानन्द जी का जन्म विक्रम संवत 1836 में हुआ, बचपन में इनका नाम विरजलाल था। इनका एक बड़ा भाई था। बृजलाल छोटा ही था कि उस पर चेचक (शीतला) का कोप हो गया कोप इतना भयानक था कि बालक बृजलाल की ऑखों की ज्योति सदा के लिये चली गई और वह ज्योति विहीन हो गये। दुर्भाग्य से माता पिता भी स्वर्गवासी हो गये। अब बृजलाल को भाई और भाभी पर ही भरोसा था लेकिन अब भाई एवं भाभी ने उन्हें डांटना फटकारना शुरू कर दिया। बृजलाल ने बहुत सहन किया, अन्ततः उन्हें घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा। मन में बैरागी भाव उत्पन्न हुआ और वह घर छोड़कर चल दिये। अनेक विपदाओं को झेलते हुए आप ऋषिकेश हरिद्वार पहुंचे और भक्ति भाव में लीन हो गये। प्रज्ञाचक्षु बृजलाल ने वहां एक वृद्ध सन्यासी पूर्णानन्द से सन्यास लेकर अब आप दिण्डी स्वामी विरजानन्द बन गये, और वह देश भ्रमण करते हुए मथुरा पहुंच कर जमना किनारे एक छोटा सा विद्यालय (गुरूकुल) चलाने लगे। वहां वह संस्कृत व्याकरण वेद वेदांग का ज्ञान कूट–कूट कर ब्रह्मचारियों में भरते थे। स्वामी दयानन्द मथुरा पहुंचकर आश्रम में प्रवेश करते हैं और कुटिया के बाहर से कहते हैं स्वामीजी मैं अन्दर आ सकता हूं। अन्दर से आवाज आई कौन ? स्वामी दयानन्द बोले भगवन यही तो जानने आया हूं कि मैं कौन हूं ?

गुरूवर समझ गये कि कोई जिज्ञासु मेधावी विद्वान है। कहा अन्दर आ जाओ। दयानन्द जी अन्दर पहुंचकर गुरूवर के चरण स्पर्श करके बैठ गये परिचय हुआ और अपनी जिज्ञासा प्रकट की। स्वामी दण्डी जी ने कहा दयानन्द अभी तक तुमने क्या पढ़ा है।

स्वामी दयानन्द बोले गुरूवर काशी विद्या पीठ में संस्कृत के ग्रंथ लघुसिद्धान्त कौमदी आदि और कुछ वेद वेदांग तथा पौराणिक ग्रंथ संस्कृत साहित्य के हमने पढ़े हैं। दण्डी जी ने कहा इन ग्रंथों से वेदों के गूढ़ रहस्य को नहीं जान सकते। कुछ ग्रंथ स्वामीजी साथ भी ले गये थे। गुरूवर बोले इन ग्रंथों को तो जाओ जमना में विसर्जित कर आओ।

तब स्वामी दयान्द ने गुरूवर विरजानन्द जी के सानिध्य में एवं निर्देशन में रहकर, महर्षि पाणिनि-के लिखे-ग्रंथ जो कि संस्कृत साहित्य में उच्च कोटि के माने जाते हैं उन्हें आपने पढ़ना प्रारंभ कर दिया। संस्कृत व्याकरण तथा अष्टाध्याई महाभाष्य वेद उपवेद दर्शन शास्त्र और उपनिषद मनुस्मृति आदि कई ग्रंथ गुरूवर के आश्रम में रहकर वर्षो पढ़ते रहे। साथ ही साथ आपने अष्टांग योग विद्या का अभ्यास करके उसे सिद्ध किया। आपकी कठिन साधना का ही प्रतिफल था जो कि 18 घण्टे तक समाधि लगाने की क्षमता प्राप्त की।

गुरूवर स्वामी विरजानन्द सरस्वती के गुरूवर मथुरा में कायी वर्षो तक पढ़कर और अष्टांग योग सिद्ध करके अनेक वैदिक विद्याओं में आप दक्ष (पारंगत) हुए। वेदों के भाष्य करने की दक्षता भी आपको वहां प्राप्तु हुई स्नातकों के दीक्षान्त समारोह एवं बिदाई बेला में आपने अपने पूज्य गुरूवर को दक्षिणा स्वरूप एक थाल भरकर लोंग श्री चरणों में भेंट की। गुरूवर लवंग (लोंग) खाते थे। गुरू दक्षिणा में लवंग भरा थाल दयानन्द जी ने जब भेंट किया तो गुरूवर विरजानन्द कहने लगे, दयानन्द तुमसे मुझे कुछ और ही गुरू दक्षिणा चाहिए थी। दयानन्द ज ने कहा भगवन आज्ञा कीजिये। यह शरीर आपके चरणों में अर्पण है। गुरूवर ने कहा कि दयानन्द भारत माता सदियों से विदेशी आतताइयों की गुलामी में जकड़ी हुई है और जर जर हो चुकी है। मातृ–भूमि को मुक्त कराने का प्रयत्न करो। और दूसरा कार्य यह कि वेद विद्या जो कि लुप्त हो रही है इसका संसार में प्रचार प्रसार करो। यही मेरी गुरू दक्षिणा है।

वास्तव में दोनों गुरू शिष्य के मन में पीड़ा भी यही थी देश को स्वतन्त्र कराने की, और देश की प्राचीन वैदिक संस्कृति को पुर्नस्थापित कराने की। दरअसल दोनों महात्माओं के हृदय में एक ही दिशा थी और एक ही लक्ष्य था। शिष्य को गुरू की तलाश थी और गुरू को भी शिष्य मिल गया। दयानन्द जी ने कहा कि गुरूवर आपकी आज्ञा का मैं अपनी आखरी श्वांस तक पालन करूंगा। स्वामी दयानन्द ने अपने पूज्य गुरूवर के चरणों में सिर रख दिया और दण्डी स्वामी गुरूवर ने अपने प्रिय शिष्य दयानन्द जी के सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया। अपने गुरूवर से आशीर्वाद लेकर स्वामी दयानन्द गुरूवर के गुरूकुल से विदा हुए।

निरन्तर..............

आचार्य बलदेव जी को दी गई श्रद्धांजलि

त्याग और सौम्यता की प्रतिमूर्ति थे आचार्य बलदेवजी—महाशय धर्मपाल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान, वीतराग सन्यासी, गौ भक्त महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य, गुरूकुल परम्परा के पोषक, वैदिक विद्वान आचार्य बलदेव जी का गत 28 जनवरी 2016 का दयानन्द मठ रोहतक में निधन हो गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज हनुमान रोड में रविवार 7 फरवरी को श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम का प्रारंभ आर्य समाज हनुमान रोड के ध र्माचार्य डॉ. कर्णदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ के साथ हुआ। श्रद्धांजलि सभा का संचालन सभा मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने किया, उन्होंने आचार्य जी की विशेषताओं को स्मरण कराते हुए, श्रद्धांजलि देने के लिए पहुंचे, महानुभावों के सम्मुख उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को रखा।

श्रद्धांजलि देने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के आचार्य विजय पाल, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के छाया प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मु—कश्मीर के प्रधान राकेश चौहान, मन्त्री रविकान्त, विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली के प्रवक्ता श्री विनोद बन्सल, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधानप श्री गंगा प्रसादजी, समाज मन्त्री ठाकुर विक्रम सिंह जी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री दयाराम राजाराम बसैया, सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की अध्यक्षा साधवी उत्तमायति, आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड के प्रधान श्री भारतभूषण त्रिपाठी, राष्ट्र कवि सारस्वत मोहन मनीषी, आर्य केन्द्रिय सभा के प्रधान एवं एम.डी.एच. के चैयरमेन महाशय धर्मपालजी, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के महामन्त्री श्री चतुरसिंह नागर, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की श्री प्रकाश कथुरिया, आर्य अनाथालय से श्रीमती श्रीबाला चौधरी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डी.ए.वी. टंकारा ट्रस्ट की ओर से श्री अजय सहगल, कलकत्ता से पधारे श्री आनन्द कुमार आर्य, ब्रह्मचारी श्री सुमेधा आर्य, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के मन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, वरिष्ठ पत्रकार श्री बनारसी सिंह ने अपने श्रद्धसुमन अर्पित किए। इस अवसर पर दिल्ली एवं आस—पास के प्रदेशों के अनेक आर्य समाज एवं आर्य

शिक्षण संस्थाओं, आर्य वीरदल के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता धर्माचार्य एव गणमान्य जन बड़े संख्या में उपस्थित हुए। अनेक देशों को आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य समाजों से प्राप्त हुए शोक सन्देश प्राप्त हुए। इनमें आर्य समाज टोरंटों (कनाड़ा) से श्री अमर एरी जी, आर्य प्रतिनिधि सभा मॉरिशस से श्री उदयनारायण गंगू, आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया, हालैण्ड, अमेरिका, फिजी आदि प्रमुख है।

श्री सुरेशचन्द्र आर्य सर्वसम्मति से प्रधान मनोनीत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक सभा प्रधान आचार्य बलदेवजी की मृत्यु के उपरान्त उपप्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी की अध्यक्षता में रविवार 7 फरवरी 2016 को आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक के मुख्य विषय आचार्य बलदेव जी के शोक प्रस्ताव एवं उनके स्थान पर नये प्रधान की नियुक्ति का था।

बैठक की कार्यवाही ईश्वर स्तुति और प्रार्थनोपासना एवं मन्त्रोच्चारण के साथ आरंभ हुई। सभा मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने बैठक की कार्यवाही का संचालन किया एवं सभा के सशस्वी प्रधान आचार्य बलदेवजी को याद करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किया। बैठक में शोक प्रस्ताव के बाद सभा के रिक्त पदों की पूर्ति के लिए विचार–विमर्श किया गया। सभा मन्त्री जी ने कहा कि आचार्य बलदेव जी हरियाणा प्रान्त से संबंध रखते थे। अतः आचार्य विजयपाल जी को सभा का उपप्रधान बनाया जाना चाहिए। प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। सभा प्रधान का पद स्वीकार करने के लिए उपस्थित सभा सदस्य एवं अधिकरियों ने महाशय धर्मपालजी से निवेदन किया। इस पर महाशय जी ने अस्वस्थता के कारण निवेदन को अस्वीकार करते हुए उपप्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी को प्रधान पद का पदभार ग्रहण करने का निवेदन किया तथा आशार्वाद दिया। तत्पश्चात सभा में उपस्थित सदस्यों ने सर्वानुमति से श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी को प्रधान के रूप में मनोनीत किया। बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्श, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आदि से अन्तरंग सदस्य पधारें।

भिण्ड संभाग में प्रचार कार्य

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के उपप्रधान श्री मानसिंह यादव चंबल संभाग एवं अन्तरंग सदस्य श्री केशवमुनि वानप्रस्थी के द्वारा आयोजित माह जनवरी 2016 से माह फरवरी तक किए गए प्रचार कार्यों का विवरण अधिकांश मंच संचालन श्री सुदामामुनि वानप्रस्थी एवं श्री बदनसिंहजी बघेल शिक्षक के द्वारा किया गया। दिनांक 25 से 27 जनवरी 2016

1. आर्य समाज गंभीर का पुरा (पुरावस कलॉ) जिला मुरैना में आमन्त्रित विद्वान प्रो. डॉ. धर्मवीर जी परोपकारिणी सभा, अजमेर, भजनोपदेशक पं. नरदेवजी आर्य, भरतपुर, श्री सत्यपाल सरल, देहरादून, स्वामी श्री ओंकारानन्दजी बाह जिला आगरा। मंच संचालन घनश्याम जी शास्त्री।

2. 5 से 3 फरवरी 2016 आर्य समाज हसनपुरा, आमन्त्रित उपदेशक आचार्य उमेशचन्द्र जी आगरा, श्री नरदेवजी भरतपुर, श्री शिवपालजी ऐटा।

3. दिनांक 4 फरवरी से 12 फरवरी 2016 तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ माता वेदमति आर्या एवं उनके पुत्रगण, पौत्रगण के द्वारा ग्राम लालपुरा (गोरमी) जिला भिण्ड में आमन्त्रित विद्वान यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य स्वदेश जी वेद मन्दिर मथुरा, पं. श्री नरदेव जी भरतपुर, वेदपाठी ब्र. अरविन्द, ब्र. राष्ट्रवशु, गुरूकुल वृन्दवन।

4. 7 से 9 फरवरी ग्राम सिरमिती जिला मुरैना में आमन्त्रित विद्वान आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक गुरूकुल होशंगाबाद, पं. शिवपाल आर्य एटा, श्रीमती सावित्री आर्या दिल्ली, मंच संचालन श्री घनश्याम शास्त्री।

5. 19 से 21 फरवरी आर्य समाज सर्वा जिला भिण्ड आमन्त्रित विद्वान स्वामी ओंकारानन्दजी फरेरा आगरा, श्री उमेशचन्द्रजी आगरा, प्रियंका भारती गुरूकुल घुसावर।

6. 22 से 24 फरवरी 2016 ग्राम नुनहड़ जिला भिण्ड आमन्त्रित विद्वान स्वामी ओंकारानन्द जी फरेरा, आगरा, आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, पं. श्री नरदेवजी भरतपुर (राजस्थान)।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल तथा आर्य समाज असलसोल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

छः दिनों से चल रहे आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल तथा आर्य समाज आसनसोल का वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम के पहले दिन एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें आर्य समाज आसनसोल द्वारा स्थापित एवं संचालित तीन विद्यालयों डी. ए. वी. स्कूल, दयानन्द विद्यालय तथा आर्य कन्या उच्च. विद्यालय तथा आर्य कन्या उच्च. विद्यालय के छात्र–छात्राओं तथा शिक्षक–शिक्षिकाओं के अलावा आर्य समाज के प्रतिनिधियों तथा शहर के हजारों गणमान्य लोगों ने भाग लिया। इसके बाद के तीन दिनों में तीनों विद्यालयों के द्वारा विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये तथा क्रीड़ा, शैक्षणिक एवं क्विज प्रतियोगिता के प्रतिभागियों तथा विजेताओं को पुरूस्कार से सम्मानित किया गया। पुरूस्कार प्रदान करने वालों में मुख्य रूप से श्री अमरनाथ चटर्जी चैयरमेन, आसनसोल नगर निगम, स्वामी मारूपानन्दजी महाराज प्राध्यापक, रामकृष्ण मिशन हाई स्कूल, श्री उत्तम कुमार चटोपाध्याय, ए.डी.आई. ऑफ स्कूल्स, श्रीमती संहितादास, एस. आई. हीरापुर सर्किल, बर्जपुर, श्री राकेश सिंह एडिशनल डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस, आसनसोल दुर्गापुर, कमिश्नरेट, तब्बसुम आरा, डिप्टी मेयर आसनसोल नगर निगम आदि उपस्थित थे।

दिनांक 30 तथा 31 जनवरी को आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर बंगाल प्रान्त के विभिन्न आर्य समाजों से आए लगभग छः सौ प्रतिनिधियो ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने कहा कि आर्य समाज आसनसोल तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद केड़िया जी के नेतृत्व में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी सराहनीय कार्य हो रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री गंगाप्रसाद आर्य ने इस अवसर पर कहा कि वर्तमान में आर्य समाज की आवश्यकता बहुत बढ़ गई है क्योंकि समाज के लोग विभिन्न अन्धविश्वासों के शिकार हो रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड के प्रधान आर्य भारतभूषण त्रिपाठी जी ने कहा कि श्री केड़िया जी का कार्य केवल बंगाल तक ही सीमित नहीं है। झारखण्ड को भी उनका सहयोग निरन्तर मिलता रहा है।

अपने उद्घाटन भाषण में श्रममन्त्री प. बंगाल सरकार श्री मलय घटक ने कहा कि आसनसोल में वैसे तो अनेक विद्यालय हैं लेकिन आर्य समाज द्वारा संचालित इन विद्यालयों की बात ही कुछ और है। यहां हजारों

छात्र–छात्राओं को न केवल शिक्षा प्रदान की जाती है बल्कि समाज का निर्माण किया जाता है। निश्चित ही इन छात्र–छात्राओं के कारण आने वाले समय में समाज का स्वरूप कुछ और होगा। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद केड़िया तथा तीनों विद्यालय परिवार के प्रति अपना आभार एवं प्रेम प्रकट करता हूं।

राज्य स्तरीय इस दो दिवसीय कार्यक्रम के अवसर पर श्री जगदीश शर्मा, श्री अरूण शर्मा, श्री नथमल शर्मा, श्री रामअवतार चोखनी, कोलकाता के श्री आनन्द देव आर्य, श्री दीपक आर्य, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री रमेश अग्रवाल, श्रीमती अर्चना शास्त्री के अतिरिक्त श्री प्रतापसिंह, श्री कृष्ण मिश्र, श्री लक्ष्मीनारायण केड़िया, श्री बजरंगलाल केड़िया, श्री उमा सर्राफ, श्री जयप्रकाश केड़िया एवं दिल्ली से पधारी साध्वी उत्तमायतिजी आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का समापन आर्य कन्या उच्च. विद्यालय की छात्राओं के रंगारंग कार्यक्रम से हुआ, जिसे लोगों ने काफी सराहा।

वेद प्रचार कार्यक्रम

दिनांक 1 से 7 फरवरी 2016 तक ग्राम मण्डोदा में वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें आमन्त्रित भजनोपदेश श्री भानुप्रकाश बरेली उत्तर प्रदेश से एवं सुश्री सुमन आर्या, दिल्ली से पधारीं।

धार जिले के ग्राम दिलावरा में वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें आमन्त्रित भजनोपदेशिका कु. प्रियंका आर्या एवं भजनोपदेशक श्री दिनेशदत्त पधारे।

ग्राम बावड़िया में 2 से 4 फरवरी तीन दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें आमन्त्रित श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री उपदेशक एवं श्री कमलकिशोर शास्त्री भजनोपदेशक मध्य भारतीय सभा, भोपाल उपस्थित थे। कार्यक्रम से प्रभावित होकर श्री अनिल पटेल, श्री धर्मराज बिरला, श्री महादेव पटेल, श्री ओम बिरला एवं राकेश इंगला ने यज्ञ पर नशा छोड़ने का संकल्प लिया। कार्यक्रम को सैकड़ों लोगों ने सुना व सराहा।

सभी स्थानों पर विद्वान के रूप में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य के उद्‌बोधन हुए।

वैदिक धर्म प्रचार का महत्वपूर्ण अवसर उज्जैन सिंहस्थ

दिनांक 22 अप्रेल से 21 मई 2016 तक

मान्यवर,

भारत वर्ष में कुंभ और सिंहस्थ के नाम पर संभवतः ये विश्व के सबसे बड़े आयोजन होते हैं। जिसमें एक माह तक करोड़ों की संख्या में जन मानस का अपना जाना होता है।

हम प्रयास करके भी कभी इतनी बड़ी संख्या एकत्रित नहीं कर सकते। यह हमारी बात, वैदिक सिद्धान्तों को करोड़ों व्यक्तियों तक पहुंचाने का बहुत बड़ा समय है। इस बार 21 अप्रेल से 21 मई तक एक नहीं दो स्थानों पर पांडाल लगाकर वैदिक धर्म प्रचार की योजना बनाई गई है। इसके द्वारा पूरा प्रयास रहेगा कि हम आने वाली इतनी बड़ी संख्या में से लाखों व्यक्तियों तक अपनी बात पहुंचावेगें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऐसे ही अवसर पर कुंभ में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी।

भव्य यज्ञशाला, प्रवचन, व्याख्यान, भजन की प्रस्तुती, विशाल प्रदर्शनी, विचार चैनल के माध्यम से लघु फिल्म शो, विक्रय हेतु अनेक स्टॉल, वैदिक विचारधारा का निःशुल्क साहित्य वितरण, बाहरी साज सज्जा यह सबकुछ अभूतपूर्व करने का प्रयास प्रारंभ हो चुका है।

किन्तु हम सबका सहयोग ही इस पवित्र वेद प्रचार के भव्य आयोजन को सफल बना सकता है।

अतः कृपया सभी इस पवित्र कार्य में अपनी आहुति प्रदान करें। कार्यक्रम हेतु आवश्यक सुझाव भी आर्य समाज, नई सड़क, उज्जैन के पते पर भेज सकते हैं।

सभी दान राशि **"सिंहस्थ मेला वैदिक धर्म प्रचार समिति"** के नाम से चेक या ड्राफ्ट द्वारा, आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) के पते पर भेजें।

SBI A/c No. 35072661286 IFS Code : SBIN0000492

दान राशि खाते में जमा कर या जमा स्लीप पर अपना नाम, स्थान एवं पता लिखकर फोटो कॉपी भिजवायें।

Email : aryasmjujnkumbh2016@gmail.com

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी	**लक्ष्मीनारायण पाटीदार**	**वेदप्रकाश आर्य**
सभाप्रधान	संयोजक	कोषाध्यक्ष
म.भा.आ.प्रति.सभा	वैदिक धर्म प्रचार समिति	वैदिक धर्म प्रचार समिति
9425137097	**9827078880**	**9425930484**

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना - पढ़ाना और सुनना - सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT # 98262-71062